प्लासी युद्ध के कारण एवं परिणाम

बंगाल पर ब्रिटिश सत्ता की स्थापना भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। वस्तुतः अंग्रेज वर्षों से इस ताक में थे कि किसी प्रकार बंगाल की राजनीतिक सत्ता का अपहरण किया जाये ताकि व्यापार की दिशा को अपनी ओर मोड़ा जा सके। अंग्रेजों को यह सुअवसर प्लासी युद्ध ने दिया।

बंगाल पर अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में साहसी एवं कूटनीतिज्ञ अली वर्दी खाँ का शासन था। जब तक अली वर्दी खाँ जीवित रहा तब तक उसने यूरोपीय लोगों को बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। किंतु दुर्भाग्यवश 1756 ई. में अली वर्दी खाँ की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात उसका नाती सिराजुद्दौला गद्दी पर बैठा। सिराजुद्दौला के राज्यारोहण के साथ ही बंगाल षडयंत्रों एवं संघर्षों का केन्द्र बन गया, जिसके फलस्वरूप एक वर्ष के भीतर ही बंगाल पर अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हो गयी।

ब्रिटिश सत्ता का यह विस्तार बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के साथ संघर्ष के फलस्वरूप सम्भव हुआ। इस संघर्ष के कई कारण थे। सिराजुद्दौला का सौतेला भाई मुरादुद्दौला तथा पूर्णिया का सूबेदार शौकतजंग दोनों अपने को बंगाल की गद्दी का दावेदार मानता था। जब कभी ये दोनों नवाब के विरुद्ध षडयंत्र करते अंग्रेज अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें सहायता देते थे। अतः आरंभ से ही नवाब सिराजुद्दौला अंग्रेजों को संदेह की दृष्टि से देखता था। इधर अंग्रेजों ने भी नवाब के साथ दुर्व्यवहार किया जिससे तनाव बढ़ता गया।

इस कटुता के आर्थिक कारण

भी थे। अंग्रेज मुगल बादशाह फर्रुखसियर द्वारा 1717 ई. में निर्गत आदेशपत्र के अनुसार बिना कर दिये व्यापार करते थे। यह दस्तक (Free Pass) प्रथा के नाम से संज्ञापित था। अंग्रेज दस्तक प्रथा का दुरुपयोग करते थे। कम्पनी के कर्मचारी इसका उपयोग निजी व्यापार में करने लगे। यहाँ तक कि कई भारतीय व्यापारी भी अंग्रेजों से मिलकर इसका लाभ उठाते थे जिससे अन्य व्यापारियों की तुलना में इनके समान सस्ते होते थे। इससे बंगाल का व्यापार चौपट हो गया।

इन्हीं दिनों फ्रांस और अंग्रेजों के बीच युद्ध की संभावना बनी। दोनों अपने-अपने किले की मरम्मती एवं किलेबन्दी प्रारंभ कर दी। अंग्रेज कलकत्ते की किलेबंदियाँ आरंभ कर दी तो फ्रांसीसी चन्द्रनगर की। सिराजुद्दौला ने इसे रोकने का फरमान जारी किया तथा कहा कि आप व्यापारी हैं आपको किले की क्या आवश्यकता है। जब आप हमारे संरक्षण में हैं तो आपको दुश्मन का कैसा डर। फ्रांसीसियों ने तो नवाब के फरमान का आदर किया लेकिन अंग्रेजों ने इसकी अवहेलना की, जिससे कटुता बढ़ती गई। आगे नवाब ने अंग्रेजों से कासिम बाजार की फैक्टरी दिखाने को कहा लेकिन इन्होंने इससे इन्कार कर दिया।

फलतः नवाब ने अंग्रेजों की कासिमबाजार की फैक्टरी पर आक्रमण किया और उसे जीतकर 16 जून 1756 ई. को कलकत्ता पर चढ़ाई की। हॉलवेल ने किले की सुरक्षा का प्रबंध किया लेकिन नवाब ने 20 जून को किले पर अधिकार कर लिया। यहीं पर Black Hole Tragedy की घटना हॉलवेल के अनुसार घटी। इसके अन्तर्गत जैसा कि हॉलवेल ने बताया है 146 अंग्रेज बंदियों को नवाब के आदेशानुसार 18 फीट

लंबी 14 फीट 10 इंच चौड़ी एक अंधेरी कोठरी में रातभर के लिये बंद कर दिया गया था जिसके फलस्वरूप 123 व्यक्ति मर गये। आधुनिक खोजों से यह सिद्ध होता है कि दुर्घटना कभी नहीं हुई थी।

कलकत्ता के पतन की सूचना जब मद्रास पहुँची तब कलकत्ता पर पुनः अधिकार करने के लिए सामुद्रिक मार्ग से वाटसन को तथा स्थल मार्ग से क्लाइव को भेजा गया। 2 जनवरी 1757 ई. को अंग्रेजों ने कलकत्ता पर पुनः अधिकार कर लिया। नवाब ने एक बड़ी सेना लेकर कलकत्ता की ओर प्रस्थान किया लेकिन एक साधारण मुठभेड़ के बाद अपने खिलाफ स्थानीय लोगों द्वारा रचे गये साजिश को भाँपकर उसने अंग्रेजों से अलीनगर की संधि कर ली। इस संधि के द्वारा नवाब ने अंग्रेजों को वे सारी सुविधायें दे दी गई जो उन्हें मुगल बादशाह द्वारा मिली हुयी थी। साथ ही नवाब ने अंग्रेजों को क्षतिपूर्ति की एक बड़ी राशि देना मान लिया तथा कम्पनी को कलकत्ता में किलाबंदी करने का अधिकार भी मिल गया।

अलीनगर की संधि के फलस्वरूप अंग्रेजों और नवाबों के बीच सद्भावना की स्थापना नहीं हो सकी। अतः दोनों पक्षों के बीच कभी भी युद्ध हो सकता था और दोनों के बीच कुछ ही दिनों के अंदर युद्ध हुआ भी।

इधर सिराजुद्दौला के विरुद्ध राज्य में असंतोष बढ़ता जा रहा था। उसकी धार्मिक अनुदारता के कारण हिन्दू असंतुष्ट थे। नवाब ने राज्य के बड़े-बड़े अधिकारियों एवं सेठों को भी असंतुष्ट कर दिया था। रामवल्लभ को दीवान के पद से हटा दिया गया था। जगत सेठ जो एक बड़ा व्यापारी था उसे अपमानित किया गया एवं मीरजाफर जैसे उच्चाकांक्षा वाले व्यक्ति से मीर बख्शी का पद छिन लिया गया था। अतः इन दरबारियों ने अंग्रेजों के साथ

मिलकर सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्र रचा।

सिराजुद्दौला ने भी अलीनगर की संधि की अवमानना करने लगा। उसने क्षतिपूर्ति की रकम जिसे अंग्रेजों को देने का वादा किया था उसे पूरा नहीं किया। अतः क्लाइव ने नवाब पर दोषारोपण किया कि वह अलीनगर की संधि का पालन नहीं कर रहा है और नवाब के उत्तर मिलने के पहले ही वह अपनी सेना लेकर प्लासी के मैदान की ओर चल पड़ा। 23 जून 1757 को प्लासी का युद्ध हुआ। षड्यंत्र के कारण नवाब की अधिकांश सेना ने युद्ध में भाग नहीं लिया। नवाब भाग खड़ा हुआ परन्तु राजमहल के निकट पकड़ा गया और से उसे मुर्शिदाबाद भेज दिया गया। यहीं पर मीरजाफर के लड़के मीरन के आदेश से मार दिया गया। 25 जून को मीर-जाफर मुर्शिदाबाद पहुँचा और पाँच दिन बाद क्लाइव ने वहाँ पहुँच कर मीरजाफर को बंगाल का नवाब घोषित किया।

सामरिक दृष्टि से प्लासी का युद्ध महत्व-पूर्ण नहीं माना जा सकता है। यह युद्ध नहीं धोखेबाजी था। नवाब के अधिकांश सैनिक युद्ध में भाग नहीं लिये। सेनापति मीरजाफर और रायदुर्लभ दोनों ने इस युद्ध में सिराजुद्दौला को धोखा दिया। इस तरह हम देखते हैं कि नवाब के पराजय का कारण सैनिक दुर्बलता न होकर क्लाइव की कूटनीति और षड्यंत्र था। क्लाइव ने जगत सेठ को भय दिखाया तथा मीर जाफर की महत्वाकांक्षाओं को जगाया तथा बिना लड़े युद्ध जीत लिया। के.एम. पणिक्कर के अनुसार यह एक सौदा था जिसमें बंगाल के धनी सेठों तथा मीरजाफर ने नवाब को अंग्रेजों के हाथ बेच डाला।

प्लासी के युद्ध के बाद होने वाली लूट

ने अंग्रेजों को अनन्त साधनों का स्वामी बना दिया। पहली किश्त जो अंग्रेजों को मिली वह 8 लाख पौंड की थी जो चाँदी के सिक्कों के रूप में ही थी। मैकाले के अनुसार यह धन कलकत्ता एक सौ से अधिक नावों में भर कर लाया गया था। बंगाल उस समय भारत का सबसे धनाढ्य प्रान्त था और उद्योग तथा व्यापार में सबसे आगे था। वस्तुतः बंगाल के इस अनन्त धन की सहायता से ही अंग्रेजों ने दक्कन विजय कर लिया तथा उत्तरी भारत को भी प्रभाव में ले आये।

प्लासी का युद्ध, उसके पश्चात होने वाली घटनाओं के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। अब बंगाल अंग्रेजों के अधीन हो गया जो फिर स्वतंत्र नहीं हो सका। नया नवाब मीर मीरजाफर अपनी रक्षा तथा पद के लिये अंग्रेजों का मुखापेक्षी हो गया। अंग्रेजों की 6000 सैनिक नवाब की रक्षा के लिए बंगाल में स्थित थी। शनैः शनैः समस्त शक्ति कम्पनी के हाथों में चली गई। नवाब की असमर्थता का अनुमान इस बात से लगा सकते है कि वह दीवान राय दुर्लभ तथा राम नारायण को उनके विश्वासघात के लिये दण्डित करना चाहता था, परन्तु कम्पनी ने उसे रोक दिया। शीघ्र ही मीर जाफर अंग्रेजों के जुए (yoke) से दुखी हो गया। वह डच लोगों से मिलकर अंग्रेजों को बाहर निकालने का षड्यंत्र रचने लगा। क्लाइव ने इस षड्यंत्र को नवम्बर 1759 में लड़े बेदारा के युद्ध में डच लोगों को परास्त कर विफल कर दिया। जब मीर जाफर ने भावी घटनाओं को समझने से इंकार कर दिया तो उसे 1760 ई. में कम्पनी के मनोनीत व्यक्ति मीर कासिम के लिये पद का त्याग करना पड़ा।

प्लासी युद्ध के बाद कम्पनी की स्थिति का भी कायाकल्प हो गया। पहले वह बहुत सी विदेशी कम्पनियों में से एक थी जिसे नवाब एवं उसके अधिकारियों को

धन देना पड़ता था। अब वह न केवल नवाब के पद का निर्धारक बन गया बल्कि उसका बंगाल के व्यापार पर एकाधिकार भी हो गया।

इस तरह हम देखते हैं कि प्लासी के युद्ध ने न केवल बंगाल पर अंग्रेजी सत्ता की स्थापना की बल्कि भविष्य में भारत पर अंग्रेजी सत्ता की स्थापना के द्वार खोल दिये।

-o-